

## 2026 年「伊勢」と日本スタディプログラム 最終レポート

三重県伊勢市にある皇學館大学の「伊勢」と日本スタディプログラム (Ise and Japan Study Program) で過ごした 3 週間は、私の学術的な歩みにおいて最も意義深い経験の一つとなりました。このような貴重な機会を与えてくださった伊勢市、ならびに皇學大学の皆様に心より感謝申し上げます。

本プログラムでは、伊勢神宮の歴史や、神嘗祭・月次祭といった恒例祭、そして 20 年に一度行われる式年遷宮について学びました。これらの学習を通じて、農業の伝統や祭祀の継続性、そして自然への崇敬が、いかに日本の宗教観を形作っているかについて理解を深めることができました。

学術的な学びに加え、現地見学も非常に充実していました。御塩殿神社では、神事に用いられる御塩が伝統的な手法で作られている様子を拝見し、祭祀における「清め」の文化が今も守られていることを実感しました。また、二見興玉神社では、神話と自然景観が融合した調和の象徴である「夫婦岩」を参拝しました。さらに、朝熊山の金剛證寺を訪れたことで、伊勢地方における神仏習合の歴史的背景についても学ぶことができました。

また、和歌山県の熊野地方への巡礼も、このプログラムの重要な一部でした。熊野古道を歩くことで、日本で古くから続く巡礼の伝統に触れることができました。熊野那智大社と青岸渡寺が隣接して建つ様子は、神道と仏教の歴史的な関わりを象徴しており、那智の滝はその圧倒的な規模から、日本の信仰における自然の神聖さを体現していました。あわせて、熊野三山のうち熊野速玉大社と熊野本宮大社も公式参拝し、伝統的な環境の中で今も生き続ける祭祀を目の当たりにしました。

特に、伊勢神宮の内宮での御垣内参拝 (公式参拝) は、私にとって最も忘れがたい瞬間でした。厳かな空気と、自然と調和した建築様式の中に、深い神聖さを感じることができました。

インドに帰国後は、このプログラムで得た知識を共有するとともに、自身の修士論文のテーマである「伊勢神宮の恒例祭と、そこに表れる日本人の自然観・宗教観」の研究に、これらの知見を活かしていく所存です。

この 3 週間は、私の学術生活においてかけがえのない、糧となる経験となりました。本プログラムの実現にご尽力いただいたすべての皆様に、改めて深く御礼申し上げます。

## 2026 "Ise" and Japan study program Final report

The three weeks I spent in the “Ise and Japan Study Program” at Kogakkan University in Ise City, Mie Prefecture, were among the most meaningful experiences of my academic journey. I sincerely express my gratitude to Ise City and Kogakkan University for providing me with this valuable opportunity.

During the program, we studied the history and annual rituals of Ise Jingu, including the Kannamesai and Tsukinamisai ceremonies, as well as the Shikinen Sengu, the twenty-year rebuilding cycle of the shrine. These studies deepened my understanding of how agricultural traditions, ritual continuity, and reverence for nature shape Japanese religious thought.

Field visits enriched this academic learning. At Mishiodono Shrine, I observed how sacred salt used in shrine rituals is traditionally produced, demonstrating the preservation of ritual purity practices. At Futami Okitama Shrine, I saw the Meoto Iwa (Wedded Rocks), which symbolize harmony and reflect the integration of mythology and natural landscape. A visit to Kongosho-ji Temple on Mount Asama further illustrated the historical relationship between Shinto and Buddhism in the Ise region.

An important part of the program was our excursion to the Kumano region in Wakayama Prefecture. Walking along the Kumano Kodo pilgrimage route provided insight into Japan’s long-standing pilgrimage tradition. We visited Kumano Nachi Taisha and Seiganto-ji, which stand adjacent to one another and reflect the historical interaction between Shinto and Buddhism. We also observed Nachi Falls, whose scale and setting exemplify the sacred dimension attributed to nature in Japanese belief.

In addition, we paid formal visits to Kumano Hayatama Taisha and Kumano Hongu Taisha, two of the three Grand Shrines of Kumano, where I was able to observe living ritual practices within their traditional setting.

Participating in a formal worship ceremony at the Inner Shrine (Naiku) of Ise Jingu was a particularly memorable experience. The solemn atmosphere and architectural harmony with nature conveyed a profound sense of sacredness.

After returning to India, I intend to share the knowledge gained through this program and incorporate these insights into my master’s research on the annual rituals of Ise Jingu and their expression of Japanese perspectives on nature and religious thought.

These three weeks remain an invaluable and formative experience in my academic life, and I extend my sincere appreciation to all who made this program possible.

## अंतिम रिपोर्ट

मी (Mie) प्रांत के इसे (Ise) शहर में कोगाक्कन यूनिवर्सिटी के 'Ise and Japan Study Program' में बिताए ये 3 हफ्ते मेरी पढ़ाई और लाइफ के सबसे यादगार दिनों में से एक रहे हैं। इस बेहतरीन मौके के लिए मैं इसे शहर और यूनिवर्सिटी के सभी लोगों का दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ। यह शहर 'निहोन शोकी' में बताई गई जापानी कहानियों और इतिहास का खास केंद्र है और सदियों से लोगों की आस्था का बड़ा प्रतीक रहा है।

इस प्रोग्राम के दौरान हमें 'इसे जिंगु' के इतिहास और वहां होने वाली पूजा-पाठ की रस्मों, जैसे 'कन्नामेसाई' और 'त्सुकिनामीसाई' के बारे में बहुत कुछ जानने को मिला। साथ ही, हमने हर 20 साल में मंदिर को फिर से बनाने की परंपरा (शिकिनेन सेंगु) के बारे में भी गहराई से पढ़ा। इन लेक्चर से मुझे समझ आया कि कैसे खेती-बाड़ी की परंपराएं और कुदरत के प्रति सम्मान जापानी सोच का हिस्सा हैं। मुझे शिंतो धर्म और उसके रीति-रिवाजों में काफी दिलचस्पी है और मैं अपनी मास्टर डिग्री में इसी पर रिसर्च भी कर रही हूँ। मेरे लिए यह अनुभव इसलिए खास था क्योंकि यहाँ मुझे सिर्फ किताबों से नहीं, बल्कि खुद वहां रहकर बहुत कुछ प्रैक्टिकल सीखने का मौका मिला।

पढ़ाई के साथ-साथ जो हमने अलग-अलग जगहों के दौरे (फील्ड वर्क) किए, उन्होंने इस सफर को और भी मजेदार बना दिया। 'मिशियोदोनो तीर्थ' में मैंने देखा कि पूजा के लिए पवित्र नमक आज भी पुराने तरीके से ही बनाया जाता है। 'फुतमी ओकितामा' में 'मेओतो इवा' (दो जुड़वा चट्टानें) देखना बहुत अच्छा रहा, जो प्रकृति और जापानी मान्यताओं के मेल का सुंदर उदाहरण है। साथ ही, माउंट असासा पर 'कोंगोशो-जी मंदिर' जाकर मुझे वहां के पुराने इतिहास को समझने में मदद मिली।

हमारी कुमानो (वाकायामा) की यात्रा भी बेहद खास थी। 'कुमानो कोदो' के रास्तों पर चलते हुए मुझे जापान की पुरानी तीर्थयात्रा वाली फीलिंग आई। वहां हमने 'कुमानो नाची तैशा' और 'सीगांतो-जी' मंदिर देखे, जो एक साथ बने हैं और दिखाते हैं कि कैसे वहां अलग-अलग धर्म साथ-साथ चलते हैं। नाची झरने की विशालता देखकर समझ आता है कि जापानी लोग प्रकृति को इतना पवित्र क्यों मानते हैं। हमने कुमानो के बड़े मंदिरों (हयातामा तैशा और होंगु तैशा) के भी दर्शन किए।

मेरे लिए सबसे इमोशनल और यादगार पल वह था, जब मुझे 'इसे जिंगु' के 'नाइकू' में खास तौर पर अंदर जाकर पूजा (मिगाकी-उची संपई) करने का मौका मिला। वहां की शांति और कुदरत के साथ घुली-मिली बनावट को देखकर मन अपने आप ही श्रद्धा से भर गया। अब भारत वापस आकर मैं इस ज्ञान को सबके साथ बांटना चाहती हूँ और अपनी रिसर्च में इन बातों को शामिल करना चाहती हूँ। यूनिवर्सिटी के टीचर्स और इसे शहर के लोगों के सपोर्ट की वजह से ये 3 हफ्ते मेरी जिंदगी का एक ऐसा हिस्सा बन गए हैं, जिसे मैं कभी नहीं भूल पाऊंगी।